Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 26

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 सितम्बर 2016 ई 28 ज़िलकअदा 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

आसमानी गवाहियों और कुरआन शरीफ की दृढ़ प्रमाणों वाली आयतों और स्पष्ट हदीसों ने मुझे इस बात के लिए मजबूर कर दिया कि मैं अपने आप को मसीह मौऊद मान लूँ। मैं अज्ञात था और कोई मुझे नहीं जानता था और न मुझे यह इच्छा थी कि कोई मेरी पहचान करे। उसने गोशा-ए-तन्हाई से मुझे जबरन निकाला। मैंने चाहा कि छिपा रहूंगा और छिपा मरूं मगर उसने कहा कि मैं तुझे दुनिया में सम्मान के साथ प्रसिद्धि दूंगा।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अब हम उन कुछ शंकाओं का जवाब देते हैं जिन का जवाब कुछ सच्चाई के इच्छुकों ने मुझ से पूछा है और अक्सर उनमें वह शंकाऐं हैं जो अब्दुल हकीम ख़ान सहायक सर्जन पटियाला ने लिखित या मौखिक लोगों के दिलों में डाले और अपने मुर्तद होने पर ऐसी मुहर लगा दी कि अब शायद उसका अंत उसी पर होगा। मैंने इन कुछ शंकाओं का जवाब मुंशी बुरहानुल हक साहिब शाहजहान पुरी के ज़ोर देने से लिखा है कि उन्होंने बहुत नम्रता से अपने पत्र में प्रकट की है। अत: मैं नीचे मुंशी बुरहानुल हक साहिब का मूल पंक्ति प्रत्येक प्रश्न में लिखकर जवाब देता हूँ। अल्लाह की तौफ़ीक़ के साथ।

प्रश्न (1): तिरयाकुल कुलूब के पृष्ठ 157 में (जो मेरी किताब है) लिखा है। इस जगह किसी को यह भ्रम न हो कि मैंने इस भाषण में अपने नफ्स को हज़रत मसीह पर प्राथमिकता दी है क्योंकि यह एक आंशिक प्राथमिकता है कि ग़ैर नबी को नबी पर हो सकती है। फिर रिव्यूयू जिल्द 1 नंबर 6 पेज 257 में वर्णित है ख़ुदा ने इस उम्मत में से मसीह मौऊद भेजा जो पहले मसीह से अपनी सभी महिमा में बहुत अधिक है। फिर रिव्यूयू पृष्ठ 478 में लिखा है। मुझे कसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि यदि मसीह मरियम मेरे ज़माने में होता तो वह काम जो मैं कर सकता हूँ वह हरगिज़ नहीं कर सकता और वह निशान जो मुझ से प्रकट हो रहे हैं वे हरगिज़ दिखला न सकता। सारांश आपत्ति यह है कि इन दोनों इबारतों में विरोधाभास है।

उत्तर: याद रहे कि इस बात को अल्लाह तआला बहुत जानता है कि मुझे इन बातों से न कोई ख़ुशी है न कुछ उद्देश्य कि मैं मसीह मौऊद कहलाऊं या मसीह मरियम से अपने आप को बेहतर ठहराऊं। ख़ुदा ने मेरी अन्तर आत्मा को अपनी इस पवित्र वही में आप ही खबर दी है जैसा कि वह कहता है। قُلۡ اُجَرِّدُ نَفۡسِیۡ مِنۡ ضُرُوۡبِ الۡخِطَابِ अर्थात उन्हें कह दे कि मेरा तो यह हाल है कि मैं किसी ख़िताब को अपने लिए नहीं चाहता अर्थात मेरा लक्ष्य और मेरा मतलब इन विचारों से बेहतर है और कोई ख़िताब देना यह ख़ुदा का कार्य है मेरा इस में दखल नहीं है। रही यह बात कि ऐसा क्यों लिखा गया और वाणी में यही विरोधाभास क्यों पैदा हो गया। अत: इस बात को ध्यान करके समझ लो कि इसी प्रकार विरोधाभास है कि जैसे बराहीन अहमदिया में मैंने यह लिखा था कि मसीह मरियम आसमान से उतरेगा। मगर बाद में यह लिखा कि आने वाला मसीह मैं ही हूँ विरोधाभास का भी यही कारण था कि यद्यपि ख़ुदा ने बराहान अहमदिया मेरा नाम ईसा रखा और यह भी मुझे कहा कि तेरे आने की खबर ख़ुदा और रसूल ने दी थी। मगर क्योंकि एक गिरोह मुसलमानों का इस आस्था पर जमा हुआ था और मेरा भी यही मानना था कि ईसा आसमान से प्रकट होंगे इसलिए मैंने ख़ुदा के इल्हाम को ज़ाहिर पर अर्थ करना न चाहा बल्कि इस का वही अर्थ किया और अपनी आस्था वही रखी जो साधारण मुसलमानों की थी और इसी को ब्राहीन अहमदिया में प्रकाशित किया लेकिन इस के बाद इस विषय में बारिश की तरह अल्लाह तआला की वही नाज़िल हुई कि वह मसीह मौऊद जो आने वाला था तो ही है और उसके साथ सैंकड़ों निशान प्रकट में आए और ज़मीन और आसमान दोनों मेरी सत्यता के लिए खड़े हो गए और ख़ुदा के चमकते हुए निशान मेरे पर ज़बरदस्ती करके मुझे इस ओर ले आए कि अंतिम समय में मसीह आने वाला मैं ही हूं वरना मेरी आस्था तो वही था जो मैंने ब्राहीन अहमदिया में लिख दी थी और फिर उस पर भरोसा न करके इस वही को कुरआन शरीफ के सामने प्रस्तुत किया तो मज़बूत प्रमाणों वाली आयतों से साबित हुआ कि वास्तव में मसीह मरियम वफात पा गया है और अंतिम ख़लीफा मसीह मौऊद के नाम पर इसी उम्मत से आएगा। और जैसा कि जब दिन चढ़ जाता है तो कोई अंधेरा बाकी नहीं रहता इसी तरह सैंकड़ों निशानों और आसमानी गवाहियों और कुरआन शरीफ की दृढ़ प्रमाणों वाली आयतों और स्पष्ट हदीसों ने मुझे इस बात के लिए मजबूर कर दिया कि मैं अपने आप को मसीह मौऊद मान लूँ। मेरे लिए यह पर्याप्त था कि वह मेरे पर ख़ुश हो मुझे इस बात की हरगिज़ इच्छा न थी। मैं अज्ञात था और कोई मुझे नहीं जानता था और न मुझे यह इच्छा थी कि कोई मेरी पहचान करे। उसने गोशा-ए-तन्हाई से मुझे जबरन निकाला। मैंने चाहा कि छिपा रहूंगा और छिपा मरूं मगर उसने कहा कि मैं तुझे दुनिया में सम्मान के साथ प्रसिद्धि दूंगा। अत: यह उस ख़ुदा से पूछो कि ऐसा तूने क्यों किया? मेरा इसमें क्या दोष है। इसी तरह पहले मेरी यही आस्था थी कि मुझे मसीह मरियम से क्या तुलना है वह नबी है और ख़ुदा के बुज़ुर्ग मुकर्बियान में से है। और अगर कोई बात मेरी प्राथमिकता की तुलना में ठहरती तो मैं उसे आंशिक प्राथमिकता करार देता था। मगर बाद में जो ख़ुदा तआला का इल्हाम बारिश की तरह मेरे पर नाज़िल हुआ उसने मुझे इस आस्था पर कायम न रहने दिया और स्पष्ट रूप में नबी का ख़िताब मुझे दिया गया मगर इस तरह से है कि एक पहलू से नबी और एक पहलू से उम्मती और जैसा कि मैंने नमूना के रूप में कुछ पंक्तियां ख़ुदा तआला के इल्हाम की इस रिसाला में भी लिखी हैं उनमें से भी पता चलता है कि मसीह मरियम के मुकाबला पर ख़ुदा तआला मेरी तुलना में क्या फरमाता है। मैं ख़ुदा तआला की तेईस वर्ष की लगातार वही को कैसे नकार सकता हूं। मैं उसकी इस पवित्र वही पर ऐसा ही विश्वास करता हूँ जैसा कि उन सभी ख़ुदा की वहियों पर विश्वास करता हूँ जो मुझ से पहले हो चुकी हैं और यह भी देखता हूँ कि मसीह मरियम अंतिम ख़लीफा मूसा का है और मैं अंतिम ख़लीफा उस नबी का हूँ जो ख़ैरुर्रसूल है इसलिए ख़ुदा ने चाहा कि मुझे उस से कम न रखे। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह शब्द मेरे उन लोगों को बर्दाश्त न होंगे जिनके दिलों में हज़रत मसीह की मुहब्बत उपासना की सीमा तक पहुंच गई है, लेकिन मैं उनकी परवाह नहीं करता। मैं क्या करूँ और किस तरह ख़ुदा के आदेश को छोड़ सकता हूं और कैसे उस प्रकाश से जो मुझे दी गया अंधेरे में आ सकता हूँ। सारांश यह कि मेरी वाणी में कुछ विरोधाभास

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हमारा काम ही तब्लीग़ है और इस्लाम का संदेश पहुंचाने का काम है।

मैं एक समय से बता रहा हूं कि अगर हम ने न्याय से काम न लिया और बड़ी शक्तियों ने ग़रीब देशों के अधिकार न दिए और ग़रीब देशों की दौलत लूटनी बंद न की तो आप को यकीन होना चाहिए कि युद्ध आप के दरवाज़ा पर है।

अगर तीसरे विश्व युद्ध से बचना है तो इसका एक ही समाधान है कि अपने पैदा करने वाले की ओर लौटो और एक दूसरे के अधिकार देना, एक दूसरे से सहानुभूति और सम्मान से पेश आओ, यदि ऐसा नहीं करोगे तो फिर बचोगे नहीं।

शरीयत के हर मामले में शरीयत का अनुसरण चाहिए। और नमाज़ अदा करने के मामले में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कर दिखाया और जो उपदेश फरमाए उनकी पाबन्दी आवश्यक है।

--- (डेनमार्क के रेडियो चैनल से हुज़ूर अनवर का साक्षात्कार, हुज़ूर अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़ का दुनिया के लिए अहमदियत अर्थात सच्चे इस्लाम की शांति प्रदत्त संदेश और सुनहरी नसीहतें) - (अन्तिम भाग-2)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरेहिल अज़ीज़ के डेनमार्क, स्वीडन के दौरा मई,जून 2016 ई की झलकियां।

***पत्रकार ने सवाल किया: मैंने आप की जमाअत के विषय में अध्ययन किया है आप की जमाअत दुनिया भर में मिशनरी कार्य कर रही है। तो क्या आप मिशनरी कार्य के संदर्भ में कुछ ईसाई धर्म से लिया है और इस शब्द का इस्तेमाल किया है।**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यदि इस के लिए अंग्रेज़ी भाषा में कोई दूसरा अनुरूप शब्द है तो हम इसे ले सकते हैं। हमारा काम ही प्रचार है और इस्लाम का संदेश पहुंचाने का काम है। जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने यह घोषणा की थी कि मेरे आने के दो उद्देश्य हैं। एक कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचाने, ख़ुदा के निकट हो और दूसरा यह कि हर इंसान दूसरे इंसान के अधिकारों को अदा करे। एक दूसरे के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करे।

इन दोनों बातों पर अनुकरण करके ही हम दुनिया में शांति सहिष्णुता, भाईचारा और आपसी प्यार और प्रेम का वातावरण स्थापित कर सकते हैं। अत: हम दुनिया में यह संदेश पहुंचा रहे हैं कि अपने पैदा करने वाले रब्ब को पहचानो और उसके अधिकार अदा करो। और भी बता रहै हैं कि कैसे आप ख़ुदा तआला के करीब हो सकते हैं। इसका सबसे अच्छा माध्यम है कि इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाओं का पालन करो। पवित्र कुरआन के आदेश का पालन करो। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चलो। तो ये वे बातें हैं जिनका संदेश हम पहुंचा रहे हैं। तो जब हम कहते हैं कि हम मिशनरी कार्य कर रहे हैं तो हम ने यह कभी नहीं कहा कि अपने साथ शामिल होने वालों को कोई अलग शैली की शिक्षाएं दे रहे हैं

हम तो यह कहते हैं कि यह कुरआन की शिक्षा है और यह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। आप का कर्म है और आप के उपदेश हैं। तो अगर तुम इस दुनिया में और परलोक में अपने जीवन को बचाना चाहते हो तो इन शिक्षाओं का पालन करते हुए हमारे साथ जाओ।

***पत्रकार मैंने कहा कि अहमदी मुसलमानों में यह नारा हो " प्रेम सब के लिए नफरत किसी से नहीं" तो वह शब्द "एतमाद"(विश्वास) की वृद्धि क्यों नहीं करते। क्योंकि नफरत और प्यार विरोधाभास हैं जबकि विश्वास एक ऐसी चीज़ है जिस को बीच में मिलाया जा सकता है।**

इस सवाल का जवाब देते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यह एक ऐसा नारा है जो कुरआन से लिया गया है। इसका आधार कुरआन में है। एक दूसरे से प्यार करो और एक दूसरे का सम्मान करो। प्रत्येक से न्याय करो। अपने दुश्मन से भी न्याय से व्यवहार करो। जो अपने लिए अच्छा है वह अपने भाई के लिए भी पसंद करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हर जगह, हर अवसर पर मुहब्बत एक जैसी नहीं होती। आप अपने बच्चे से अलग तरह मुहब्बत करते हैं और अपने दोस्त से अलग तरीके से मुहब्बत करते हैं। इसी तरह अपनी बहन और भाई से अलग तरीके से मुहब्बत करते हैं।

एक बार हज़रत अली से उनके एक बेटे ने पूछा, क्या तुम मुझे मुहब्बत करते हैं। इस पर हज़रत अली ने कहा हां मैं तुझ से मुहब्बत करता हूं। फिर बच्चे ने पूछा क्या आप ख़ुदा से मुहब्बत करते हैं। इस पर हज़रत अली ने कहा हां मैं अल्लाह से मुहब्बत करता हूँ। इस पर बच्चे ने कहा कि यह दोनों मुहब्बतें एक जगह कैसे जमा हो सकती हैं। इस पर हज़रत अली ने कहा कि जब ख़ुदा की मुहब्बत सामने होगी तो मैं तुम्हारी मुहब्बत छोड़ दूंगा और केवल ख़ुदा से मुहब्बत करूँगा। इसका मतलब है कि मुहब्बत के विभिन्न स्तर हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि दुश्मनों से मुहब्बत उनके लिए सहानुभूति रखना है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो अपने लिए चाहो, अपने लिए पसंद करो वही दूसरों के लिए भी पसंद करो। तुम चाहो कि तुम से सहानुभूति की जाए तो फिर दूसरों के लिए भी सहानुभूति की भावना अपने मन में रखो।

इसलिए हमारे लिए हमारे इस स्लोगन "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं" का आधार कुरआन की शिक्षाओं पर है।

***एक सवाल के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैं एक समय से बता रहा हूँ कि अगर हम ने न्याय तथा इंसाफ से काम न लिया और बड़ी शक्तियों ने ग़रीब देशों के अधिकार न दिए और ग़रीब देशों की दौलत लूटनी बंद न की तो आप को विश्वास होना चाहिए कि युद्ध आप के दरवाज़ा पर है।**

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: पुस्तक "पथ वे टू पीस" पढ़ें। इसमें सम्बोधन के अतिरिक्त वह पत्र भी हैं जो बड़ी शक्तियों के प्रमुखों के नाम लिखे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैंने लॉस एंजिलिस (अमेरिका) में राजनेताओं और पढ़े लिखे लोगों के सामने सम्बोधन किया था और कहा था कि न्याय से काम लें और ध्यान करें वरना हम तीसरे विश्व युद्ध को रोक नहीं सकते। तो यह एक राजनीतिज्ञ ने मेरे विषय में हमारे सदस्यों से कहा था कि बड़े PESSIMISTIC हैं। अब उसने हमारे लोगों को संदेश दिया है कि ख़लीफा ने यहां जो कहा था सच कहा था। अब हम इन हालतों के चिन्ह देख रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जो कौमें अपने पैदा करने वाले की ओर नहीं झुकेंगी और अपने पैदा करने वाले के अधिकार अदा नहीं करेंगी और लोगों से न्याय नहीं करेंगी और लोगों के अधिकारों को अदा नहीं करेंगी तो वह सब ख़ुदा की पकड़ में आएंगी।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: पहले 1932 में आर्थिक संकट आया था। अब 2008 ई में आर्थिक संकट आया है। करोड़ों लोग बेरोज़गार हो गए हैं। इस आर्थिक संकट के बाद आतंकवाद बढ़ा है। इसका लाभ आतंकवादी संगठनों ने उठाया है और हालात उपद्रव की ओर बढ़े हैं। और इस संकट के परिणाम में दुनिया की शांति बर्बाद हुई है। यह सब ऐसी चीज़ें हैं जो युद्ध की ओर ले जा रही हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया तो अगर तीसरे विश्व युद्ध से बचना है तो इसका एक ही समाधान है कि अपने पैदा करने वाले की और लौटो और अधिकार दो। और एक दूसरे के अधिकार दो। एक दूसरे से सहानुभूति और सम्मान से पेश आओ। अगर ऐसा नहीं करोगे तो बचोगे नहीं।

***पत्रकार ने सवाल किया कि क्या कारण है कि आप महिलाओं से हाथ नहीं मिलाते।**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हम इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाओं का पालन करते हुए महिलाओं के सम्मान में उनसे हाथ नहीं मिलाते। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महिलाओं के सम्मान में हाथ मिलाने से मना किया

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आजकल दुनिया के हालात काफी तेज़ी से ख़राब हो रहे हैं और दुर्भाग्य से इस का कारण मुसलमानों के कुछ गिरोह बन रहे हैं। मुस्लिम देशों के प्रमुख इनके कर्ता धर्ता भी नहीं समझते कि उन्हें इस्लाम विरोधी शक्तियां घेरे में लेने की कोशिश कर रही हैं। इस्लाम के नाम पर और जिहाद के नाम पर जो अत्याचार हो रहे हैं उनका इस्लाम की शिक्षा से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है।

इस्लाम जो शांति और न्याय करने का सबसे बड़ा वाहक है। जो इस्लामी हुकूमतों को कहता है कि शांति और न्याय के लिए इस्लामी सरकारों का सबसे बढ़कर कर्तव्य है वही शांति और न्याय की धज्जियां उड़ा रहे हैं। हर मुसलमान देश में जो उपद्रव तथा फसाद बरपा है और स्वार्थी जो इससे लाभ उठा रहे हैं वह इस लिए कि सरकारें बजाय जनता की भलाई और सुधार के लिए काम करने के अपने हितों को प्राथमिकता दिए हुए हैं।

अगर कुरआन की शिक्षा पर ही विचार नहीं करना अगर मुसलमान बन कर नहीं रहना तो बुद्धि का तो निहित है कि सोच समझ के अपने कदम उठाएं। यह देखें कि मुसलमानों के मतभेद या उनके देशों में बेचैनी और अशांति का लाभ किसको पहुँच रहा है। लेकिन उन्हें समझ नहीं आती। अतः इन मुस्लिम देशों के लिए इन दिनों में बहुत दुआ की ज़रूरत है। अल्लाह तआला उन्हें बुद्धि दे।

फिर आतंकवादी संगठनों ने इन पश्चिमी देशों में निर्दोष लोगों को मारने के अत्यधिक पाशविक और क्रूर कर्म करके इस्लाम को बदनाम करना शुरू किया हुआ है। यह भी असंभव नहीं कि इस्लाम को बदनाम करने के लिए इस्लाम विरोधी ताकतें ही ग़ैर मुस्लिम देशों में ऐसी हरकतें उन से करवा रही हों जिससे इस्लाम भी बदनाम हो और उन्हें मदद के नाम पर दुनिया को आतंकवाद से बचाने के नाम पर अपने अड्डे इन देशों में स्थापित करने के लिए एक कारण हाथ आ जाए।

अल्लाह तआला ने हमारे धर्म के नाम इस्लाम रखा है और यह नाम ही आतंकवाद और उत्पीड़न और हिंसा को अस्वीकार करता है और शांति मैत्री और प्रेम का संदेश देता है। इस्लाम का अर्थ ही शांति में रहना और शांति देना है।

अगर दुनिया के दिल जीते जा सकते हैं, अगर इस्लाम को दुनिया में फैलाया जा सकता है तो इस की सुंदर शिक्षा से, न कि चरम पंथी लोगों और विद्वानों की स्वयंभू शिक्षा से। लेकिन यह रास्ता तो वही दिखा सकता है जिसे अल्लाह तआला ने इस ज़माना का इमाम बनाकर भेजा है। न्याय तो वही स्थापित कर सकता है जिसे अल्लाह तआला ने न्याय करने के लिए भेजा है। फैसला करने वाला और न्याय करने वाला बनाकर भेजा है। इस्लाम की सुंदर शिक्षा वही लागू कर सकता है जिसे अल्लाह तआला ने इस स्थान पर नियुक्त किया है।

हम अहमदियों को भी याद रखना चाहिए कि हर हमला इस्लाम के नाम पर यह भटके हुए लोग करते हैं हमें पहले से बढ़कर हमारी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की ओर ध्यान आकर्षित करने वाला होना चाहिए। प्रत्येक ऐसी हरकत जिस से इस्लाम का नाम बदनाम होता है इस के बाद हम ने दुनिया को बताना है, हम में से हर एक ने यह बताना है कि मेरे धर्म का आधार शांति और सुरक्षा पर है। अगर इस्लाम के अनुयायियों में से कोई ऐसी हरकत करता है जो शांति और सुरक्षा को बर्बाद करने वाली है तो उस व्यक्ति या समूह के व्यक्तिगत और अपने हित प्राप्त करने वाला कर्म है। इस्लाम की शिक्षा से इसका कोई संबंध और वास्ता नहीं है।

विरोध के इस दौर में जो गैर मुसलमानों के द्वारा इस्लाम का भी विरोध है और मुसलमानों से जमाअत का भी विरोध है इसमें हमें बुद्धि और मेहनत से काम करना होगा।

इसमें कोई शक नहीं कि इस्लाम वह धर्म है जिसने दुनिया में फैलना है। इंशा अल्लाह तआला और इसमें भी कोई शक नहीं कि इस्लाम का पुनर्जागरण अब अहमदियत के माध्यम से होना है। इंशा अल्लाह तआला। यह अल्लाह तआला निर्दिष्ट किया हुआ है लेकिन हमें यह कोशिश करनी चाहिए और दुआ करनी चाहिए कि यह तरक्की के नज़ारे हम अपने जीवन में देख सकें और हमारी कमज़ोरियां और सुस्तियां इस तरक्की को हम से दूर करने वाली न हों। इसलिए अपनी कमज़ोरियों को छिपाने और अल्लाह तआला की कृपा को अवशोषित करने के लिए हमें मेहनत और दुआओं की ज़रूरत है।

कुरआन मजीद, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों में वर्णित कुछ दुआओं के विशेष रूप से पढ़ने का आदेश।

आदरणीय एवन वरनान साहिब Belize, सयद नादिर सय्दैन, आदरणीय नज़ीर अहमद अयाज़ साहिब(आफ न्यूयार्क,अमरीका) की वफात,मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 29 जुलाई 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

आजकल दुनिया के हालात काफी तेज़ी से ख़राब हो रहे हैं और दुर्भाग्य से इस का कारण मुसलमानों के कुछ गिरोह बन रहे हैं। मुस्लिम देशों के प्रमुख इनके कर्ता धर्ता भी नहीं समझते कि उन्हें इस्लाम विरोधी शक्तियां घेरे में लेने की कोशिश कर रही हैं। इस्लाम के नाम पर और जिहाद के नाम पर जो अत्याचार हो रहे हैं उनका इस्लाम की शिक्षा से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह जो सरकारें अपने लोगों पर जुल्म ढा रही हैं वे भी इस्लामी शिक्षा से उनका दूर का भी सम्बन्ध नहीं। इस्लामी शिक्षा के ख़िलाफ काम कर रही हैं। इस्लाम में यह कहाँ लिखा है कि मासूमों की हत्या करो और फिर यह न केवल इस्लाम के नाम पर ग़ैर मुसलमानों को मार रहे हैं बल्कि इससे बढ़कर मुसलमानों का नर संहार हो रहा है इस में मासूम बच्चे, वृद्ध, महिलाऐं सभी शामिल हैं। मुस्लिम देशों की शक्ति कमज़ोर से कमज़ोर हो रही है और यही बात जो इस्लाम विरोधी ताक़तें हैं वे चाहती हैं कि इस्लामी सरकारें कभी मजबूत न हों। इस्लामी देश कभी आर्थिक मामले में या शांति और सुरक्षा की दृष्टि से मज़बूत न हों।

मुस्लिम देशों के प्रमुख और उनके पैदा किए गए उलेमा न ही इस्लामी शिक्षा को समझते हैं और न ही समझना चाहते हैं। ख़ुदा तआला के भेजे हुए इस ज़माने के इमाम और हादी की बात सुनने से इन्कार करते हैं जिस को ख़ुद अल्लाह तआला ने अपने वादे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार इस समय इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को दुनिया में जारी करने के लिए भेजा है। परिणाम हम क्या देख रहे हैं जैसा कि मैंने उल्लेख किया है कि इस्लाम जो शांति और न्याय करने का सबसे बड़ा वाहक है। जो इस्लामी हुकूमतों को कहता है कि शांति और न्याय के लिए इस्लामी सरकारों का सबसे बढ़कर कर्तव्य है, वही शांति और न्याय की धज्जियां उड़ा रहे हैं।

हर मुसलमान देश में जो उपद्रव तथा फसाद बरपा है और स्वार्थी जो इससे लाभ उठा रहे हैं वह इस लिए कि सरकारें बजाय जनता की भलाई और सुधार के लिए काम करने के अपने हितों को प्राथमिकता दिए हुए हैं। मुसलमान मुसलमानों को मार रहे हैं। सहन का माद्दा प्रमुखों में नहीं रहा।

अब तुर्की में पिछले दिनों जो विद्रोह हुआ वास्तव में यह विद्रोह किसी भी इस्लामी शिक्षा के अनुसार justified नहीं है लेकिन इसके परिणाम स्वरूप जो सरकार ने कदम उठाए हैं या कर रही है वह भी क्रूर है कि जितने भी सरकार के राजनीतिक लिहाज़ से विरोधी हैं चाहे दंगों में शामिल नहीं हैं उनके ख़िलाफ कार्रवाई हो रही है। यह देख भी चुके हैं कि इस के नतीजे में अभी या कुछ समय बाद प्रतिक्रिया प्रकट होती है लेकिन फिर भी अगर अत्याचार जारी रहे तो प्रतिक्रिया ज़रूर होती है और फिर इस प्रतिक्रिया को इस्लाम विरोधी ताकतें हवा देती हैं इससे फायदा उठाती हैं। बड़ी ताकतें अपना हथियार बेचती हैं और दोनों पक्ष की हमदर्द बन जाती हैं। इराक, लीबिया, शाम आदि में यह सब कुछ देखने के बावजूद मुसलमान शासकों को समझ नहीं आता। अगर कुरआन की शिक्षा पर ही विचार नहीं करना अगर मुसलमान बन कर नहीं रहना तो बुद्धि का तो निहित है कि सोच समझ के अपने कदम उठाएं। यह देखें कि मुसलमानों के मतभेद या उनके देशों में बेचैनी और अशांति का लाभ किसको पहुँच रहा है। लेकिन उन्हें समझ नहीं आती। अत: इन मुस्लिम देशों के लिए इन दिनों में बहुत दुआ की ज़रूरत है। अल्लाह तआला उन्हें बुद्धि दे।

फिर आतंकवादी संगठनों ने इन पश्चिमी देशों में निर्दोष लोगों को मारने के अत्यधिक पाशविक और क्रूर कर्म करके इस्लाम को बदनाम करना शुरू किया हुआ है। यह भी असंभव नहीं कि इस्लाम को बदनाम करने के लिए इस्लाम विरोधी ताकतें ही ग़ैर मुस्लिम देशों में ऐसी हरकतें उन से करवा रही हों जिस से इस्लाम भी बदनाम हो और उन्हें मदद के नाम पर, दुनिया को आतंकवाद से बचाने के नाम पर, अपने अड्डे इन देशों में स्थापित करने के लिए एक कारण हाथ आ जाए।

अगर सही इस्लामी शिक्षा से वे अवगत हों ज्ञान हो तो उन्हें पता होना चाहिए कि यह कोई इस्लामी शिक्षा नहीं है कि मासूमों की हत्याएं की जाऐं। एयर पोर्टों पर, स्टेशनों पर, यात्रियों को और बच्चों को महिलाओं को बुज़ुर्गों को, बीमारों को मार दिया जाए। चर्चों में जाकर लोगों और पादरियों को मार दिया जाए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो युद्ध में जो सेना भिजवाते थे उसे भी हिदायत होती थी कि महिलाओं, बच्चों, बुज़ुर्गों, भिक्षुओं, पादरियों की हत्या नहीं करनी। प्रत्येक व्यक्ति जो हथियार नहीं उठाता या किसी भी रूप में मुसलमानों के ख़िलाफ युद्ध का हिस्सा नहीं बनता उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाना।

(उद्धरित अलमअजम अल्औसत लित्तिबरानी भाग 3, हदीस 4162 दारुल फिक्र उसमान उर्दन 1999 ई उद्धरित शरह मआनी अल्आसार भाग 2 पृष्ठ 126 हदीस 5067 मक्तबा रहमानी उर्दू बाज़ार लाहौर)

इसलिए न ही यह कुरआन की शिक्षा है, न आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा, न ही आप की और आप के चारों ख़लीफाओं और सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम के किसी कर्म से यह प्रमाणित है। अल्लाह तआला ने हमारे धर्म का नाम इस्लाम रखा है और यह नाम ही आतंकवाद और उत्पीड़न और हिंसा को अस्वीकार करता है और शांति मैत्री और प्रेम का संदेश देता है। इस्लाम का अर्थ ही शांति में रहना और शांति देना है।

फिर अल्लाह तआला कुरआन करीम में फरमाता है कि وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ (यूनस 26) और अल्लाह तआला सुरक्षा और शांति के घर की तरफ बुलाता है। फिर एक वास्तविक मुसलमान जब नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह तआला की दया और कृपा मांगता है लेकिन यह जो ज़ालिम लोग हैं यह तो न कुरआन को मानते हैं न इस पर अनुकरण करते हैं न नमाज़ें पढ़ते हैं। उन्होंने तो अपना एक नया धर्म और नई शरीयत बनाई हुई है। बहरहाल जब एक मुसलमान एक वास्तविक मुसलमान सुरक्षा मांगता है, नमाज़ पढ़ता है तो शरारत, दुस्साहस और अनाचार और दुराचार से बचता है। अल्लाह तआला फरमाता है कि नमाज़ बुरी और अवांछित बातों से रोकती है। फिर इस्लाम कहता है सलाम को रिवाज दो और सलामती फैलाओ सलाम कहना केवल मुसलमानों तक सीमित नहीं है। यद्यपि कि आजकल पाकिस्तान में भी वहां के देश के कानून ने उलेमा के तहत उस पर भी यह अपना कब्जा जमाया हुआ है या monopolize किया है कि सिवाय मुसलमानों के कोई सलाम नहीं कह सकता और अहमदी तो बिल्कुल सलाम नहीं कह सकते। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में तो बिना किसी अन्तर के सबको सलाम कहा जाता था।

(उद्धरित अस्सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान हदीस 12)

इस्लाम की शांति स्थापित करने के लिए यह कुछ गुण जो मैंने बयान की हैं। यह संक्षेप में कुछ बातें मैंने बताई हैं। विस्तार में जाएं और किसी भी रंग में देख लें किसी भी आदेश को ले लें तो इस्लाम शांति, संधि और प्रेम का धर्म है न कि आतंकवाद का।

अगर दुनिया के दिल जीते जा सकते हैं, अगर इस्लाम को दुनिया में फैलाया जा सकता है तो इस की सुंदर शिक्षा से, न कि चरम पंथी लोगों और विद्वानों की स्वयंभू शिक्षा से। लेकिन यह रास्ता तो वही दिखा सकता है जिसे अल्लाह तआला ने इस ज़माने का इमाम बनाकर भेजा है। न्याय तो वही स्थापित कर सकता है जिसे अल्लाह तआला ने न्याय करने के लिए भेजा है। फैसला करने वाला और न्याय करने वाला बनाकर भेजा है। इस्लाम की सुंदर शिक्षा वही लागू कर सकता है जिसे अल्लाह तआला ने इस स्थान पर नियुक्त किया है।

हम अहमदी भाग्यशाली हैं कि हम ने ज़माना का इमाम और मसीह मौऊद और महदी मौऊद को स्वीकार किया और दुनिया के इन ज़ुल्मों में शामिल होने से बचे हुए हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि "इस्लाम ने अपनी शिक्षा के दो भाग किए हैं। पहला अल्लाह तआला का अधिकार और द्वितीय बन्दों का अधिकार। अल्लाह तआला का अधिकार तो यह है कि इसे आज्ञा पालन के लिए अनिवार्य समझे और बन्दों का अधिकार यह है कि ख़ुदा तआला की सृष्टि पर दया करे। यह तरीका अच्छा नहीं कि केवल धर्म के विरोध की वजह से किसी को दु:ख दें। सहानुभूति और इलाज एक चीज़ है और धर्म का विरोध दूसरी चीज़। मुसलमानों का वह गिरोह जो जिहाद की ग़लती और ग़लत फहमी से पीड़ित हैं उन्होंने यह भी वैध रखा है कि काफिरों का माल अवैध रूप से लेना उचित है।"

फरमाते हैं कि "बल्कि ख़ुद मेरे बारे में भी उन लोगों ने फतवा दिया है कि उनका माल लूट लो।" (यह फतवा ग़ैर अहमदी उलमा का जमाअत अहमदिया के लोगों के लिए आज भी जारी है। आप फरमाते हैं लोगों ने फतवा दिया है कि उनका माल लूट लो अर्थात अहमदियों का या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का) फरमाते हैं "बल्कि यहाँ तक भी कि उनकी पत्नियों को निकाल लो। हालांकि इस्लाम में इस प्रकार की अपवित्र शिक्षाएं न थीं। वह तो एक स्वच्छ और पवित्र धर्म था। इस्लाम का उदाहरण हम यूं दे सकते हैं कि जैसे पिता अपने पिता होने के अधिकार को चाहता है इसलिए वह चाहता है कि बच्चों में एक साथ सहानुभूति हो। वह नहीं चाहता कि एक दूसरे को मारें। इस्लाम जहां यह चाहता है कि ख़ुदा तआला का कोई साथी न हो वहां उसकी यह भी इच्छा है कि मानव जाति में प्रेम और एकता हो।"

(लैक्चर लुधियाना रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 281)

इसलिए यह शिक्षा है जिसे अपना कर मुस्लिम दुनिया में फिर शान-ओ-शौकत स्थापित कर सकते हैं कि ख़ुदा तआला के अधिकार को भी पहचानें और एक दूसरे के हक को भी पहचानें। मानव जाति में प्यार और स्नेह बनाने की कोशिश करें भले ही कोई किस धर्म से संबंध रखता है। अत्याचार से काम लेकर मासूमों को मारने के स्थान पर इस्लाम की शांति, संधि और प्रेम की तलवार से दिलों को घायल करके ख़ुदा तआला और उसके रसूल के नक्शे कदम पर लाकर डालें। आत्मघाती हमले करके या अन्याय से अल्लाह तआला की नाराज़गी मोल लेने के स्थान पर उनका प्रेम और नज़दीकी पाने की कोशिश करें। इस्लाम की आगोश को पिता के प्यार और दया का साया बनाएं न कि अपनी क्रूर हरकतों की वजह से इस्लाम पर आपत्ति करने वालों और हमला करने वालों को अधिक अवसर प्रदान करें। अगर यह नहीं रुकेंगे तो याद रखें कि सांसारिक कोशिशों और हमलों से कभी भी इस्लाम को दुनिया में

फैला नहीं सकते।

हम अहमदियों को भी याद रखना चाहिए कि हर हमला इस्लाम के नाम पर यह भटके हुए लोग करते हैं। हमें पहले से बढ़कर हमारी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की ओर ध्यान दिलाने वाला होना चाहिए। प्रत्येक ऐसी हरकत जिस से इस्लाम का नाम बदनाम होता है इस के बाद हम ने दुनिया को बताना है, हम में से हर एक ने यह बताना है कि मेरे धर्म का आधार शांति और सुरक्षा पर है। अगर इस्लाम के अनुयायियों में से कोई ऐसी हरकत करता है जो शांति और सुरक्षा को बर्बाद करने वाली है तो उस व्यक्ति या गिरोह के व्यक्तिगत और अपने हित प्राप्त करने वाला कर्म है। इस्लाम की शिक्षा से इसका कोई संबंध और वास्ता नहीं है। यह सरासर अवैध बातें हैं उसकी ज़िम्मेदारी उन पर लागू होती है जो यह मानते हैं न कि इस्लामी शिक्षा पर।

यह अल्लाह तआला का फज़ल है कि जमाअत अहमदिया इस बात के लिए हर देश में कोशिश करती है और अब अल्लाह तआला की कृपा से मीडिया के माध्यम से इसका अच्छा प्रभाव भी हो रहा है। उनके कॉलम लिखने वाले ख़ुद लिखते हैं। अब फ्रांस में जो पादरी की क्रूर हत्या हुई उस पर ही एक लिखने वाले ने लिखा है कि जहाँ यह कर्म इस बात की ओर ध्यान फेरता है कि दुनिया में धार्मिक युद्ध शुरू हो गया है लेकिन वह ख़ुद ही लिखता है। वास्तविकता यह नहीं है यह धर्म की आड़ में स्वार्थ पूरा करने वालों और मानसिक रोगियों की लड़ाई है।

पोप साहिब ने भी बड़ा अच्छा बयान दिया कि यह वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध बन गिया है लेकिन यह धार्मिक युद्ध नहीं है बल्कि स्वार्थों की लड़ाई है। उन की लड़ाई है जो उन के अपने हित हैं क्योंकि कोई भी धर्म ज़ुल्म की शिक्षा नहीं देता। तो अब तक तो यह ग़ैर ही ख़ुद ही अपने लोगों को संभाले हुए हैं लेकिन यह अत्याचार जब बढ़ते जाएंगे तो प्रतिक्रिया भी होती हैं इसलिए हमारी जिम्मेदारी बढ़ गई हैं कि हम अपना इस्लाम शांति का संदेश दुनिया में हर जगह पहुंचाएं ।

बहरहाल एक तरफ तो यह है लेकिन ऐसे भी हैं जिन तक हमारा संदेश पहुंचा हुआ है लेकिन नकारात्मक अर्थ पहनाने की कोशिश करते हैं। किसी ने मुझे लिखा कि एक व्यक्ति ने जो शायद इस्लाम से मुर्तद हुआ है मेरे बारे में एक ट्वीट किया और शायद उसमें मेरी तस्वीर भी दी है कि इस्लाम शांति का धर्म है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अत्याचार और बर्बरता की मनाही की है और लेकिन इस ब्यान के बाद फिर आगे अपनी ओर से उसने यह उपहास की शैली में लिख दिया कि यह आदेश महिलाओं के लिए नहीं है, इस्लाम छोड़ने वालों के लिए नहीं है, जो स्वधर्म त्याग अपनाते हैं उनके लिए नहीं है, अमुक चीज़ के लिए नहीं है, अमुक चीज़ के लिए नहीं है। तो ऐसे भी हैं जब देखते हैं कि इस्लाम शान्ति की जो तस्वीर जमाअत अहमदिया प्रस्तुत करती है इससे लोग प्रभावित हो रहे हैं इस प्रभाव को दूर करने की कोशिश करते हैं और आजकल विभिन्न माध्यमों से ट्वीट और फेसबुक और विभिन्न अन्य माध्यमों को अपनाया जाता है यह कई हज़ार लोगों तक बल्कि लाखों तक यह संदेश पहुंच जाते हैं। इसलिए ऐसे लोगों पर भी नज़र रखना हमारा काम है और उन्हें जवाब देना हमारा काम है।

दुनिया तक इस्लाम का सच्चा संदेश पहुंचाने का काम जो हम ने करना है यद्यपि कि दुनिया में जमाअत अहमदिया के माध्यम से इस्लाम का पहले से बहुत अधिक परिचय हो चुका है लेकिन अब हम यह नहीं कह सकते कि संतोषजनक काम हो गया। विरोध के इस दौर में जो ग़ैर मुसलमानों के द्वारा इस्लाम का भी विरोध है और मुसलमानों की तरफ से जमाअत का भी विरोध है इस में हमें बुद्धि और मेहनत से काम करना होगा। इसमें कोई शक नहीं कि इस्लाम वह धर्म है जिसने दुनिया में फैलना है। इंशा अल्लाह तआला और इसमें भी कोई शक नहीं कि इस्लाम का पुनर्जागरण अब अहमदियत के माध्यम से होना है। इंशा अल्लाह तआला। यह अल्लाह तआला निर्दिष्ट किया हुआ है लेकिन हमें यह कोशिश करनी चाहिए और दुआ करनी चाहिए कि यह तरक्की के नज़ारे हम अपने जीवन में देख सकें और हमारी कमज़ोरियां और सुस्तियां इस तरक्की को हम से दूर करने वाली न हों। इसलिए अपनी कमज़ोरियों को छिपाने और अल्लाह तआला की कृपा को अवशोषित करने के लिए हमें मेहनत और दुआओं की ज़रूरत है। जैसा कि मैंने कहा कि हमारी तो इस्लाम विरोधी ताक़तें भी ख़िलाफ हैं और तथाकथित विद्वानों के पीछे चलने वाले मुसलमान भी ख़िलाफ हैं लेकिन हम ने हर डर को दूर करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन के पूरा होने के लिए प्रयास करना है।

अब जो कुछ पत्रकार हैं, समाचार के प्रतिनिधि हैं सवाल भी करते हैं। यूरोप में भी मुझ से सवाल किया। स्वीडन में भी इस बार दौरे पर एक पत्रकार ने सवाल किया कि तुम्हारा तो चरम पंथी समूहों द्वारा विरोध है और तुम्हारी जानों को खतरा है। कैसे आप अपने काम करोगे।? मैंने कहा हां यह बात ठीक है मुझे खतरा है। जमाअत के लोगों को खतरा है लेकिन यह जोखिम हमें अपने काम से नहीं रोक सकता। खतरा तो अब हर एक को हर जगह है। उसे मैंने कहा तुम्हें भी खतरा है। इसमें अहमदी या ग़ैर मुस्लिम का सवाल नहीं है। जो भी इन स्वार्थी लोगों के एजेंडे पर अनुकरण नहीं करता या उनकी हां में हां नहीं मिलाता उसकी जान खतरे में है लेकिन अहमदियों के तो वे भी विरोधी हैं जो कौम का नारा लगाने वाले हैं या इस्लाम विरोधी हैं तो हमें दोनों तरफ से खतरा है। लेकिन बहरहाल एक मोमिन इन बातों की परवाह नहीं करता और विश्वास पर कायम रहता है और इंशा अल्लाह तआला प्रत्येक अहमदी रहेगा।

दुनिया के जो हालात हैं उसके लिए और हर अहमदी को हर बुराई से बचने के लिए और जमाअत के रूप में दुनिया में हर जगह दुष्टों की बुराई से बचने के लिए हमें इन दिनों दुआ और सदकों पर ध्यान देना चाहिए। विशेष रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिए जैसा कि मैंने कहा आजकल हालात ख़राब से ख़राब हो रहे हैं। अल्लाह तआला दुष्टों की बुराई उन पर उल्टाए जो इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं। इस्लाम के नाम पर अत्याचार व ज़ुल्म करके अल्लाह तआला के धर्म को बदनाम कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनकी पकड़ के शीघ्र सामान करे और सभी विपत्तियों और कठिनाइयों को दूर करे।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआओं की ओर ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर फरमाया कि जिसके लिए दुआ का दरवाज़ा खोला गया तो मानो उसके लिए दया के दरवाज़े खोल दिए गए और अल्लाह तआला से जो चीज़ मांगी जाती है उन में से सबसे अधिक उसे अर्थात अल्लाह तआला से ख़ैरियत मांगना प्रिय है। उसकी सुरक्षा में आना उस को प्रिय है और फिर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दुआ इस परीक्षा के अवसर पर जो आ चुकी हो और इस परीक्षा के मुकाबला में जो अभी न आई हो लाभ देती है और अल्लाह तआला के बन्दो तुम पर अनिवार्य है कि तुम दुआ करने को धारण करो।

(सुनन तिर्मिज़ी अबवाबुद्दअवात हदीस 3548)

फिर आप ने एक अवसर पर फरमाया कि अल्लाह तआला के निकट दुआ से अधिक सम्मानित और कोई बात नहीं है।

(सुनन तिर्मिज़ि आबवाबुद्दअवात हदीस 3370)

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सदकों के बारे में फरमाया कि परीक्षाओं और आग से बचने के लिए सदके दो।

(उद्धरित कुन्ज़ुल उम्माल भाग 5 पृष्ठ 148 हदीस 15975,15978 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत लिबनान 2004 ई)

बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया कि हर मुसलमान पर सदका करना फर्ज़ है। सहाबा के पूछने पर कि जिसके पास कुछ भी न हो वह क्या करे तो आपने फ़रमाया कि वह मारूफ बातों का पालन करे। इस्लामी आदेशों पर अनुकरण करे नेकियों का पालन करना और बुरी बातों से रोके। यही उसके लिए सदका है।

(अस्सहीह बुख़ारी हदीस 6022)

लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि कोई समझे कि जिस ने माल का सदका दे दिया वह बेशक मारूफ बातों पर अनुकरण न करे और बुरी बातों से भी न रुके तो कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि बदले में सदका दे दिया। नहीं। यह तो अल्लाह तआला की अपने बंदों पर रहमत की नज़र है कि अगर कोई मजबूर है माल नहीं रखता तो नेकियाँ करना और बुराइयों से रुकना ही उसके लिए सदका बन जाता है वरना अगर कोई इस पर अनुकरण नहीं करता अर्थात नेकियों का पालन नहीं करता और बुराइयों से रुकता नहीं है तो उस के माल का सदका भी कोई महत्त्व नहीं रखता। जिस तरह दिखावे की नमाज़ें कोई महत्त्व नहीं रखतीं और बन्दों के मुंह पर मारी जाती हैं उसी तरह सदका का भी कोई महत्त्व नहीं। एक मोमिन से तो यही उम्मीद की जाती है कि जब वह सदका करता है दुआएं करता है तो अपना हर कर्म भी ख़ुदा तआला की ख़ुशी के अनुसार ढालने की कोशिश करे और जब ऐसी स्थिति होती है तो अल्लाह तआला के फज़लों को अवशोषित करने के लिए माध्यम बनती है और कठिनाइयों और विपत्तियों से

मनुष्य को बचाती है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फरमाया कि सदका और दुआ से बला टल जाती है।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 81,82 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू. के)

फिर दुआओं के स्वीकार होने के लिए क्या हालत होनी चाहिए। इस बारे में आप फरमाते हैं कि "दुआओं की स्वीकृति के लिए यह भी ज़रूरी है कि इंसान अपने अन्दर शुद्ध परिवर्तन पैदा करे। अगर बुराइयों से बच नहीं सकता और ख़ुदा तआला की सीमाओं को तोड़ता है तो दुआ में कोई प्रभाव नहीं रहता।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 27 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू. के)

अत: अल्लाह तआला की सीमाओं के भीतर रहते हुए दुआओं और सदकों पर ज़ोर देने की बहुत अधिक हमें कोशिश करनी चाहिए ताकि हम अल्लाह तआला के फज़लों को अवशोषित करने वाले बनते चले जाएं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर दुआओं की ओर हमें ध्यान दिलाते हुए फरमाते हैं कि

" मैं तो हमेशा दुआ करता हूँ मगर तुम लोगों को भी चाहिए कि हमेशा दुआ में लगे रहो। नमाज़ें पढ़ो और तौबा करते रहो। जब यह हालत होगी तो अल्लाह तआला रक्षा करेगा और अगर सारे घर में एक व्यक्ति भी ऐसा होगा तो अल्लाह तआला इस के कारण दूसरों की भी रक्षा करेगा।" फरमाया "जो विशेष ईमान रखते हैं अल्लाह तआला उन की ओर लौटता है और आप उनकी सुरक्षा करता है।"

फिर आप ने फरमाया कि "ख़ुदा तआला कभी किसी सच्चे से विश्वासघात नहीं करता। सारी दुनिया भी अगर उसकी दुश्मन हो और उस से वैर करे तो उसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकती। ख़ुदा बड़ी शक्ति और सामर्थ्य वाला है और इंसान ईमान की शक्ति के साथ उस की सुरक्षा के नीचे आता है और उसकी शक्तियों और कुदरतों के चमत्कार देखता है तो उस पर कोई अपमान न आएगा। याद रखो ख़ुदा तआला ज़बरदस्त पर भी ज़बरदस्त है।" (अर्थात कोई बहुत अधिक शक्तिशाली है तो इससे भी शक्तिशाली है।) फरमाया "बल्कि अपनी बात पर भी विजयी है। सच्चे दिल से नमाज़ें पढ़ो और दुआ में लगे रहो और अपने सब रिश्तेदारों और प्रिय जनों को यही शिक्षा दो। पूरे तौर पर ख़ुदा की तरफ होकर कोई नुकसान नहीं उठाता। नुकसान की मूल जड़ गुनाह है।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 67 से 70 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू.के)

अत: हमें शुद्ध होकर ख़ुदा तआला के आगे झुकने और उस से मदद मांगने की ज़रूरत है। वे सभी विपत्तियों और कठिनाइयों को दूर करे और दुश्मन को अपमानित और पराजित करे। विरोधियों के जमाअत के ख़िलाफ हर उपाय और हर हमले को नाकाम और असफल कर दे।

अल्लाह तआला ने हमें कुरआन में भी कुछ दुआएं सिखाई हैं उन्हें भी पढ़ना चाहिए और समझकर पढ़ना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुरआन की दुआ के बारे में भी मार्गदर्शन फरमाया और यह बात उल्लेख की कि अल्लाह तआला ने कुरआन में जो दुआएं सिखाई हैं वे बताई ही इसलिए गई हैं कि एक मोमिन शुद्ध होकर जब यह दुआएं मांगे तो अल्लाह तआला उसे स्वीकार करे। तो विपत्तियों के दूर होने और बुराइयों से सुरक्षित रहने के लिए हमें इन कुरआन की दुआओं पर भी ज़ोर देना चाहिए। पवित्र कुरआन में हमें एक दुआ सिखाई जो कि हम आमतौर पर नमाज़ में भी पढ़ते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बहुत अधिक पढ़ने की ओर ध्यान दिलाया है और वह दुआ यह है कि رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ (अल्बकरह 202)कि हे अल्लाह तआला हमें इस दुनिया की अच्छाइयां भी प्रदान फरमा और भविष्य की भलाइयां भी प्रदान कर और हमें आग की यातना से बचा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फरमाते हैं कि "आदमी अपने नफस की समृद्धि के लिए दो चीजों का मोहताज है एक दुनिया के संक्षिप्त जीवन और इसमें जो कुछ दु:ख और कष्ट. परीक्षाएं आदि उसे आती हैं उन से शांति में रहे दूसरे अनाचार और दुराचार और आध्यात्मिक बीमारियाँ जो उसे ख़ुदा तआला से दूर करती हैं उनसे मुक्ति पाए।" फरमाया कि "दुनिया की अच्छाइयां यह है कि क्या शारीरिक और क्या आध्यात्मिक तौर पर प्रत्येक बला और बुरे जीवन और अपमान से सुरक्षित रहे" और "फरमाया और وَّ فِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً ....में जो परलोक का पक्ष है वह भी दुनिया की अच्छाइयों का परिणाम है।" (उसका फल है इसके परिणाम में मिलता है) "अगर दुनिया की अच्छाई इंसान को मिल जाए तो वह नेक लक्षण परलोक के लिए है।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 303-302 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू.के)

फिर आग की सज़ा से बचाने के बारे में फरमाया कि "अभिप्राय केवल वही आग नहीं जो कयामत को होगी।..... दुनिया में हज़ारों प्रकार की आग है।" और इसके बारे में फिर आपने फरमाया कि इसमें तरह-तरह की परेशानियां हैं, भय हैं, रिश्तेदारों के साथ मामले हैं, रोग आदि ये सब बात शामिल हैं। फरमाया कि "मोमिन दुआ करता है कि सारी प्रकार की आगों से हमें बचा।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 190 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू.के)

फिर हालात ख़राब हों, परीक्षाएं हों। कई बार इंसान दृढ़ नहीं रहता तो दुश्मन के ख़िलाफ मज़बूत इरादे के लिए हमें दुआ सिखाई। अल्लाह तआला की मदद लेने की दुआ सिखाई। एक दुआ है कि

رَبَّنَا اغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَ اِسۡرَافَنَا فِیۡۤ اَمۡرِنَا وَ ثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَ انۡصُرۡنَا عَلَی الۡقَوۡمِ الۡکٰفِرِیۡنَ

(आले इम्रान:148)कि हमारे रब्ब हमारे अपराध और सुस्तियों और हमारे कार्यों में अत्याचार क्षमा कर दे और हमारे कदमों को मज़बूत कर और काफिरों के ख़िलाफ मदद कर। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फरमाते हैं कि "अत: स्पष्ट है कि अगर ख़ुदा गुनाह क्षमा करने वाला न होता तो ऐसी दुआ कभी न सिखाता है। (चश्मा मअरफत रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 25)

फिर कुरआन की एक दुआ है। رَبِّ اِنِّیۡ لِمَاۤ اَنۡزَلۡتَ اِلَیَّ مِنۡ خَیۡرٍ فَقِیۡرٌ (अल्क़सस 25)कि हे मेरे रब्ब अपनी ख़ैर अपनी भलाई से जो कुछ भी मुझ पर नाज़िल करे उसका मोहताज हूँ। यह दुआ भी करनी चाहिए। कुरआन में और भी बहुत सारी दुआएं हैं जिन्हें अल्लाह तआला के फज़लों को अवशोषित करने के लिए पढ़ते रहना चाहिए। जैसा कि मैंने कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया कि अल्लाह तआला ने कुरआन में इन दुआओं का उल्लेख किया है और यह इसलिए फरमाया है कि मनुष्य शुद्ध होकर उस से मांगे तो अल्लाह तआला उन्हें स्वीकार करे।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएं हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआएं हैं। एक दुआ के बारे में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की है। आप फरमाते हैं कि "यह मुझ पर इल्हाम हुई। अर्थात अल्लाह तआला ने मुझे यह दुआ सिखाई है और वह यह है कि

رَبِّ کُلُّ شَیۡءٍ خَادِمُکَ رَبِّ فَاحۡفَظۡنِیۡ وَانۡصُرۡنِیۡ وَارۡحَمۡنِیۡ

फरमाया कि मेरे दिल में डाला गया है कि यह इस्मे आज़म है और यह वह शब्द हैं जो इसे पढ़ेगा प्रत्येक आपदा से उसे मुक्ति होगी।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 264 संस्करण 1985 ई प्रकाशन यू.के)

अल्लाह तआला जमाअत को समग्र रूप से भी और व्यक्तिगत रूप से भी हर बुराई से बचाए और विरोधियों की बुराई उन पर उल्टाए। मुसलमानों को बुद्धि और समझ दे कि वह अल्लाह तआला के भेजे हुए की आवाज़ को सुनें और उम्मते वाहिदा बनकर इस्लाम की शांतिपूर्ण और सुंदर शिक्षा को दुनिया में स्थापित करने वाले और फैलाने वाले हों।

नमाज़ के बाद मैं तीन नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऊंगा। एक जनाज़ा है आदरणीय एवन वरनान (EvanVernoo) साहिब का है। Belize के रहने वाले हैं। पिछले दिनों 49 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। Belize जमाअत के प्रारंभिक अहमदियों में थे और इस समय सचिव प्रचार के रूप में सेवा की तौफीक पा रहे थे। 2014 ई में जलसा सालाना यू.के में भी शामिल हुए। बड़े श्रद्धालु और निष्ठावान अहमदी और एक जोश रखने वाले अहमदी थे और बावजूद इसके कि कुछ समय पहले ही अहमदी हुए थे लेकिन जमाअत के साथ ऐसी ईमानदारी और ऐसी वफ़ा और ऐसा संबंध था कि कई शायद पुराने अहमदियों में भी न हो। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करे और ऐसे श्रद्धालु हमेशा और भी अल्लाह तआला प्रदान फरमाए।

दूसरा जनाज़ा है सय्यद नादिर सय्दैन का है। जो रबवा में हमारे नासिर फायर एंड बचाव सेवा के प्रभारी थे। सय्यद ग़ुलाम सय्दैन के बेटे थे। उनकी 23 जुलाई 2016 को पमज़ अस्पताल इस्लामाबाद में 55 साल की उम्र में वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। दिल की खून प्रदान करने वाली आर्टरयों में clot के कारण उनकी मौत हुई। उनकी दादी ने 1905 ई में कोहाट से पत्र लिख कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी लेकिन उनके बाकी लोग अहमदी नहीं हुए थे। सैयद नादिर सय्यदैन ने 1982 ई में ख़ुद अनुसंधान कर के बैअत की। कराची से फिर उन्होंने बी.एस.सी की। इस के बाद वहीं कराची में ही

रहे और 1989 ई में यह कराची से इस्लामाबाद शिफ्ट हो गए। मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ज़िला स्तर पर उन को बहुत सारे विभागों में सेवा करने की तौफीक़ मिली। मौतमिद ज़िला रहे। ख़िदमते ख़लक के विभाग में रहे। विभिन्न स्थानों पर मेडिकल कैंप लगाने की उन्हें तौफीक़ मिली। प्रभारी लेखक मंच मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ज़िला इस्लामाबाद के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ मिली। 1999 ई में इस्लामाबाद से रबवा शिफ्ट हो गए और फिर उन्होंने 2000 ई में अपना जीवन वक्फ कर दिया था। मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जैसा कि मैंने बताया कि नासिर फायर एंड बचाव सेवा विभाग है इस के यह प्रभारी रहे। इसी तरह स्पोर्टस परिसर के भी प्रभारी रहे। जूडो कराटे और मार्शल आर्ट के बड़े माहिर थे और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध मार्शल आर्ट के विशेषज्ञ थे और पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व दूसरे देशों में करते रहे। उन्होंने रबवा में भी ख़ुदाम और बच्चों को मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग दी। ख़िलाफत से बड़ा गहरा संबंध था। बड़ी ईमानदारी व निष्ठा से सेवा करने वाले थे और बड़े सरल स्वभाव के थे और हमेशा उनकी यह ख़ूबी थी कि उनका चेहरा मुस्कराता रहता था। कितनी भी तबीयत ख़राब हो कैसी भी परेशानियां हो हमेशा ख़ुश रहे। अल्लाह तआला उनसे वहां भी ऐसा व्यवहार करे जो उनके लिए भी ख़ुशी का कारण हो और उनकी नस्लों के लिए भी। अल्लाह तआला की कृपा से मूसी थे और वहाँ रबवा में उनको दफन किया गिया। पत्नी के अतिरिक्त उनके माता पिता भी जीवित हैं और तीन बेटियां और तीन बेटे हैं। एक बेटा उनका मदरसा अल्हिफज़ में कुरआन याद कर रहा है अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे।

तीसरा जनाज़ा है आदरणीय नज़ीर अहमद अयाज़ साहिब का जो सदर जमाअत न्यूयार्क अमेरिका थे। 3 जूलाई 2016 ई को 69 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। और यह 23 मई 1947 ई में तंज़ानिया में पैदा हुए थे। 1977 ई में न्यूयॉर्क पहुंचे और जमाअत के कार्यों में भाग लेने लगे। पहले बतौर सचिव माल, फिर 35 साल तक न्यूयॉर्क जमाअत के सदर के रूप में सेवा की तौफीक़ मिली। न्यूयार्क के विभिन्न नमाज़ केंद्रों में हर महीने एक बार मुबल्लिग़ सिलसिला के साथ जाया करते थे। वित्तीय कुरबानी और हर तहरीक में भाग लेने की कोशिश करते। जमाअत के लोगों को नियमित रूप से ई-मेल और पत्र लिख कर कुरबानी की ओर ध्यान दिलाते। जमाअत की सेवाएं बड़ी ख़ुशी और ज़िम्मेदारी से अदा करते। आमतौर पर युवाओं को प्रशिक्षण भी देते प्राय कई बार होता है जो अधिकारी हैं दूसरी पंक्ति तैयार नहीं करते लेकिन उनमें ख़ूबी थी कि युवाओं को प्रशिक्षण देकर युवाओं को भी तैयार कर रहे थे ताकि वह जमाअत की सेवा में आगे आने वाले हों और वहां मस्जिद में या केंद्र में लड़कों और युवा लड़कों और लड़कियों को लाने के लिए उन्होंने खेल आदि की भी व्यवस्था की हुई थी या फिर और कार्यक्रम हों जिससे उनका ध्यान रहे आजकल के युवा ताकि बर्बाद होने से बचें। शैक्षिक कक्षाएं पुरुषों और महिलाओं की हर शनिवार या रविवार को लगातार आयोजित करते थे जो अब ताहिर अकादमी के नाम से वहां जारी है। हियोमेन्टी फर्स्ट न्यूयॉर्क के निदेशक भी थे उसमें भी उन्होंने बड़ा काम किया और बावजूद सदर होने के हर काम कर लेते थे। ज़रूरत होती सफाई सेंटर में तो ख़ुद ही सफाई और कूड़ा उठाकर बाहर फेंकते। नमाज़ के पाबन्द थे। मरहूम मूसी थे। वहीं मूसियों के मकबरा में उनको दफन किया है उनकी पत्नी और एक इकलौती बेटी है। अस्मा अयाज़। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और दया का व्यवहार करे स्तर ऊंचा करे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने भी एक बार उन्हें कहा था कि आप एक अमेरिका की जमाअतों में एक आदर्श सदर हैं और मेरी दुआ है कि हमेशा रहें। अल्लाह तआला करे कि और भी ऐसे पैदा होते रहें। 35 साल तक उन्हें जमाअत के सदर और निष्ठावान सदर के रूप में सेवा की तौफीक़ मिली।

अमीर साहिब अमेरिका और उप अमीर अमेरिका ने भी लिखा कि बड़ी विनम्रता से सेवा करने वाले थे और प्रशासनिक कार्यों में दूसरों से बढ़कर शामिल होते और दूसरों के साथ मिलकर एक कार्यकर्ता की तरह भी काम करते। केवल अधिकारी बनकर नहीं रहे। बहरहाल अल्लाह तआला उन सब के स्तर ऊंचा करे माफी का व्यवहार करे। नमाज़ के बाद जैसा कि मैंने कहा उनकी नमाज़ जनाज़ा अदा करूंगा।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

शेष पृष्ठ 7 पर

है।

हुज़ूर अनवर ने कहा: विभिन्न देशों की संयुक्त, जनजातियों की अपनी अपनी परंपराओं के अनुसरण करते हैं। हिंदू मिलते हुए अपने दोनों हाथ जोड़ते हैं। जापानी मिलते हुए अपना सिर झुकाते हैं। अफ्रीका में कुछ जनजातियों के राजा ऐसे हैं कि वे साथ मिलकर खाना नहीं खाते। चाहे किसी देश का राष्ट्रपति के साथ ही क्यों न हों। उन्होंने अपना खाना अलग एकांत में ही खाना है। हुज़ूर अनवर ने कहा, मैं किसी दूसरे से कहीं अधिक महिलाओं का आदर करता हूँ।

***पत्रकार ने सवाल किया यहाँ नमाज़ों में, कार्यक्रमों में महिलाओं को अलग क्यों बैठाते हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया "अल्हयाओ मिनल ईमान" लज्जा ईमान का हिस्सा है। पहले इसी तरह होता था। जब मस्जिद में अलग जगह नहीं होती थी तो मर्द आगे नमाज़ पढ़ते थे और महिलाऐं उनके पीछे नमाज़ पढ़ती थीं। फिर ऐसा भी होता है कि मस्जिद के एक हॉल में एक हिस्से में पुरुष नमाज़ पढ़ते हैं और बीच में स्क्रीन लगाकर दूसरी ओर महिलाएं नमाज़ पढ़ती हैं। अब जहां अलग हॉल हैं वहाँ दोनों जगह अलग है।

अब यहाँ महिलाओं के नीचे वाला हॉल बिल्डिंग में है और मस्जिद के नीचे है। इस समय पुरुष अधिक हैं इसलिए निचले वाला हॉल भी पुरुषों को दिया हुआ है। इस OVER FLOW के कारण है। और महिलाओं को मस्जिद से मुकाबले दूसरी बिल्डिंग में एक बड़ा हॉल दिया गया है। अगर मर्द और अधिक हो जाएं तो वह फिर मार्की में नमाज़ पढ़ते हैं और औरतें हॉल ही में पढ़ती हैं।

***पत्रकार ने आख़री सवाल यह किया कि महिलाओं के एक समूह ने एक मस्जिद बनाई है और उसका नाम मरियम मस्जिद रखा है और वहाँ तीन औरतें इमाम हैं। क्या यह आप के निकट स्वीकार्य है?**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: YOU TUBE या WHATSAPP पर यह वीडियो मौजूद है जहां औरत इमामत करवा रही है। और पुरुष और महिलाऐं एक दूसरे के साथ खड़े नमाज़ें पढ़ रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया है आप अपना धर्म बनाएंगे या आप अगर मुसलमान हैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म पर चलेंगे। जो भी कुरआन में लिखा हुआ है हम उस का अनुसरण करेंगे। और जिस तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने कर्म से कर के दिखाया हम उसका अनुसरण करेंगे।

जो कुछ वे कर रहे हैं यह सिर्फ इस ज़माने में लोगों को ख़ुश करने के लिए है और जो ग़ैर मुसलमानों द्वारा आपत्तियां होती हैं उनसे बचने के लिए है।

हुज़ूर अनवर ने कहा: शरीयत के हर मामले में शरीयत का अनुसरण चाहिए। और नमाज़ अदा करने के मामले में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कर दिखाया और जो उपदेश फरमाए उनकी पाबन्दी आवश्यक है। अगर कोई सच्चा और वास्तविक मुसलमान है तो वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नमूना का ही अनुसरण करेगा।

यह इंटरव्यू ग्यारह बज कर 25 मिनट पर समाप्त हुआ।

(अनुवादक शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

नहीं मैं तो ख़ुदा तआला के इल्हाम का पालन करने वाला हूँ। जब तक मुझे ज्ञान नहीं हुआ वही कहता रहा कि शुरू में मैंने कहा और जब मुझे उस से ज्ञान हुआ है मैंने उसके विरुद्ध कहा। मैं इंसान हूँ मुझे भविष्य के जानने का दावा नहीं। बात यही है कि व्यक्ति चाहे स्वीकार करे या न करे। मैं नहीं जानता कि ख़ुदा ने ऐसा क्यों किया। हाँ इतना जानता हूँ कि आसमान में ख़ुदा तआला का सम्मान ईसाइयों के बारे में बड़ा जोश मार रहा है उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान के विपरीत वह अपमान के शब्द इस्तेमाल किए हैं कि क़रीब है कि उनसे आसमान फट जाए। इसलिए ख़ुदा दिखलाता है कि इस रसूल के छोटे सेवक इस्रायली मसीह मरियम से बढ़कर हैं। जिस व्यक्ति को इस वाक्यांश से क्रोध हो उसे अधिकार है कि वह अपने क्रोध से मर जाए। परन्तु ख़ुदा ने जो चाहा है किया और ख़ुदा जो चाहता है करता है। क्या मनुष्य का सामर्थ्य है कि वह आरोप करे कि ऐसा तूने क्यों किया।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 22, हकीकतुल वही, पृष्ठ 152 से 155)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 1 September 2016 Issue No. 26

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

इरशाद सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बिनसरेहिल अज़ीज़

"होश की उम्र में आकर जब बच्चे वाकफीन नौ और जमाअत के कार्यक्रमों में भाग लें तो उनके दिमाग़ में यह सुदृढ़ हो कि उन्होंने केवल धर्म की सेवा के लिए अपने आप को पेश करना है। अधिक से अधिक बच्चों के दिमाग़ में डालें कि तुम्हारे जीवन का उद्देश्य धर्म की शिक्षा प्राप्त करना है। यह जो वाकफीन नौ बच्चे हैं उनके दिमाग़ों में यह डालने की ज़रूरत है कि धर्म की शिक्षा के लिए जो जमाअत के धार्मिक संगठन हैं उसमें जाना चाहिए। जामिया अहमदिया में जाने वालों की संख्या वाकफीन नौ में काफी अधिक होनी चाहिए।"

(ख़ुत्बा जुम्आ 18 जनवरी 2013)

☆ ☆ ☆

क्या आप ख़ुत्बा जुम्अः सुनते हैं?

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज का ख़ुत्बा जमुअः भारतीय समय के अनुसार शाम 5.30 शाम पर अहमदिया मुस्लिम टेलिवीज़न द्वारा प्रसारित होता है। यह ख़ुत्बा उर्दू के अतिरिक्त संसार की कई भाषाओं में साथ के साथ अनुवाद होता है।

ख़ुत्बा जमुअः में हुज़ूर अनवर इस्लामिक विषयों , कुरआन हदीस की बातों के अतिरिक्त सामजिक विषयों, मुसलमानों की अवनति के कारण और उस से बचने के मार्ग आदि विषयों पर उपदेश फरमाते हैं एक सच्चे अहमदी मुसलमान के लिए ख़ुत्बा ईमान में वृद्धि का एक प्रमुख साधन है। पाठकों से निवेदन है कि समय पर वह ख़ुत्बा जुम्अः ख़ुद भी सुनें और अपने दोस्तों को भी सुनाएं ख़ुत्बा जुम्अः मुस्लिम टेलिवीज़न अहमदिया में देखने और सुनने के लिए इन्टरनेट के माध्यम से www.alislam.org से भी लाभ उठाया जा सकता है। (सम्पादक)

☆ ☆ ☆

तब्लीग़ का विस्तार करो

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो तब्लीग़ का विस्तार करने के संबंध में जमाअत के दोस्तों को समझाते हुए फरमाते हैं:

"तुम भी अगर ख़ुदा तआला से संबंध पैदा करोगे और तहज्जुद और ज़िक्र पर ज़ोर दोगे तो तुम्हारे आसपास के रहने वाले तुम से दुआएं करवाएँगे, तुम्हारी बुजुर्गी का प्रभाव उनके दिलों पर होगा। अब तुम में से हर व्यक्ति यह भूल जाए कि वह ज़ैद या बकर है। बल्कि वह यह सुनिश्चित कर ले कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ख़लीफा और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस देश में प्रतिनिधि है। इसलिए अपने स्थान को समझो और मुझे ख़ुश खबरियां भिजवाओ कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारी जुबानों में प्रभाव दिया है और बहुत अधिक लोग अहमदियत में प्रवेश कर रहे हैं और तुम्हारे ईमानों में इतनी शक्ति दी है कि वित्तीय स्थिति दिन प्रतिदिन सही होती जा रही है और तब्लीग़ का सिलसिला फैल रहा है।"

(सवानेह फज़ले उमर, भाग 4, पृष्ठ 404 से 405)

नज़ारत इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया, कादियानी

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

माली के रूप में सेवा के इच्छुक ध्यान दें ।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के विभाग तज़ययुन में माली का पद पर नौकरी के लिए आवेदन चाहिए। जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में बतौर वित्तीय (स्थिति चतुर्थ) के ग्रेड में सेवा की इच्छा रखते हों वह निम्नलिखित शर्तों के अनुसार निवेदन दे सकते हैं।

(1) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है।

(2) उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए। बर्थ सर्टिफिकेट देना आवश्यक होगा।(3) वही उम्मीदवार सेवा के लिए उपयुक्त होगा, जो केंद्रीय समिति भर्ती कार्यकर्ताओं के इन्ट्रविवू में सफल होंगे।

(4) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिया जाएगा जो नूर अस्पताल कादियान के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त होंगे।

(5) उम्मीदवार का कादियान आने जाने का सफर खर्च अपना होगा।

(6) यदि किसी उम्मीदवार का चयन होता है तो उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

(7) प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया से लिए जा सकते हैं। इस घोषणा के दो महीने के अंदर जो आवेदन आएंगे उस पर विचार होगा।

(नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:

कार्यालय: 01872-501130 मोबाइल: 09815433760

e.mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

ज़ैली तंज़ीमों के सालाना इज्तिमा 2016 ई की तारीखों की घोषणा

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने कादियान दारुल अमान में निम्न तारीखों में ज़ैली तंज़ीमों के सालाना इज्तिमा के आयोजन की मंजूरी प्रदान की है। पुरूष तथा स्त्रीयां इस आध्यात्मिक इज्तिमा में भाग लेने के लिए अभी से तैयारी शुरू।

इज्तिमा लजना इमा उल्लाह भारत और नासरातुल अहमदिया दिनांक 15 से 17 अक्तूबर 2016 (शनिवार, रविवार, सोमवार)

इज्तिमा मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया एवं अत्फालुल अहमदिया दिनांक 15 से 17 अक्तूबर 2016 (शनिवार, रविवार, सोमवार)

इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह भारत दिनांक 18 से 20 अक्तूबर 2016 (मंगलवार, बुधवार, गुरुवार)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad